संगोष्ठी स्थल

दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई जनपद-जालौन के पुस्तकालय सभागार में संगोष्ठी का आयोजन होगा। उरई शहर झांसी एवं कानपुर के मध्य दोनों से लगभग 120 कि.मी. की समान दूरी पर स्थित है। सुगम आवागमन हेतु सड़क और रेल मार्ग सदैव उपलब्ध हैं।

यात्रा भत्ता एवं अन्य सुविधाएँ

उच्च शिक्षा विभाग के नियमानुसार निकटतम दूरी से द्वितीय श्रेणी का रेल/वास्तविक बस किराया दिया जाएगा। खानपान एवं जलपान की व्यवस्था महाविद्यालय द्वारा की जाएगी। सहभागियों से अपेक्षा है कि अपने आने की सूचना मेल/दूरभाष द्वारा अवश्य प्रदान करें, जिससे किसी भी तरह की परेशानी का सामना न करना पड़े।

कार्यक्रम विवरण

दिनांक 18 मार्च 2023, शनिवार

पंजीयन	प्रातः 09.00 बजे
उद्घाटन सत्र	प्रातः 10.30 से 12.00 बजे
चाय अंतराल	प्रातः 12.00 से 12.15 बजे
प्रथम तकनीकी सत्र	मध्यान्ह 12.15 से 01.45 बजे
दोपहर भोजन अवकाश	मध्यान्ह 01.45 से 02.30 बजे
द्वितीय तकनीकी सत्र	मध्यान्ह 02.30 से 05.00 बजे
चाय	सायं 05.00 बजे

दिनांक 19 मार्च 2023, रविवार

तृतीय तकनीकी सत्र	प्रातः 10.00-12.00 बजे
चाय अंतराल	प्रातः 12.00-12.15 बजे
चतुर्थ तकनीकी सत्र	प्रातः 12.15-01.45 बजे
दोपहर भोजन अवकाश	मध्यान्ह 01.45 से 02.30 बजे
समापन सत्र	मध्यान्ह 02.30-05.30 बजे
चाय	सायं 05.30 बजे

नोट : सभी सत्र ऑनलाइन/ऑफलाइन मोड में संचालित किए जाएंगे।

आयोजन समिति

संरक्षक मण्डल

डॉ0 हरीमोहन पुरवार
अध्यक्ष/उपाध्यक्ष
प्रबंधकारिणी कमेटी

डॉ0 देवेन्द्र कुमार
प्रबन्धक
प्रबंधकारिणी कमेटी

प्रो0 (डॉ) राजेश चन्द्र पाण्डेय
प्राचार्य
दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई

संयोजक/आयोजन सचिव

डॉ0 नीरज कुमार द्विवेदी
सम्पर्क 7905531417, 9451408948

तकनीकी संचालन समिति

डॉ0 अतुल प्रकाश बुधौलिया
मोबा. 9369869132

डॉ0 गौरव यादव
मोबा. 9826543011

डॉ0 श्रवण कुमार त्रिपाठी
मोबा. 8896180993

डॉ0 प्रवीण सिंह
मोबा. 8004083988

डॉ0 आशुतोष गुप्ता
मोबा. 8258419981

सेवा में

_____

_____

_____

उच्च शिक्षा विभाग,
उ0प्र0 शासन द्वारा प्रायोजित

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

दिनांक : 18 - 19 मार्च 2023

भारतीय संस्कृति के निर्माण में लोक संस्कृति की भूमिका : नई शिक्षा नीति के सन्दर्भ में

प्रो0 (डॉ.) राजेश चन्द्र पाण्डेय
प्राचार्य, दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई

संयोजक/आयोजन सचिव
डॉ. नीरज कुमार द्विवेदी
असि0प्रो0, हिन्दी विभाग, सम्पर्क 7905531417

आयोजन स्थल :

दयानन्द वैदिक कॉलेज,

उरई (जालौन) उ.प्र. (285001)

महाविद्यालय परिचय

दयानन्द वैदिक कॉलेज का नामकरण स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम पर हुआ है। स्वामी दयानन्द सरस्वती भारतीय संस्कृति के प्रबल पक्षधर एवं मुक्त कण्ठ उद्गाता रहे हैं। इस महाविद्यालय की स्थापना 20 जुलाई 1951 में श्री किशोरीलाल खरे (संस्थापक प्राचार्य), श्री मूलचन्द्र अग्रवाल, श्री रमाशंकर सक्सेना एवं पं. चतुर्भुज शर्मा के संयुक्त भागीरथ प्रयासों का प्रतिफल है। समूचे बुन्देलखण्ड क्षेत्र में इस महाविद्यालय की अपनी एक अनुपम, कर्मठ छवि है जिसने सदैव नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। भाषा संकाय, कला, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, ललित कला एवं प्रदर्शन कला संकाय, शिक्षक-शिक्षा संकाय तथा विज्ञान संकाय इन पांच संकायों में स्नातकोत्तर स्तर का जनपद जालौन का एकमात्र महाविद्यालय है। महाविद्यालय को यू.जी.सी. नैक द्वारा 2.61 सीजीपीए के साथ 'बी' ग्रेड प्राप्त है। साथ ही शिक्षा निदेशालय (उच्च शिक्षा), प्रयागराज द्वारा महाविद्यालय को 'क' श्रेणी प्रदान की गई है। महाविद्यालय में सुसज्जित प्रयोगशालाएं, लगभग 65000 पुस्तकों का विशाल पुस्तकालय, विभिन्न विषयान्तर्गत अद्यतन पत्र-पत्रिकाओं से युक्त वाचनालय, नवीन प्रशासनिक भवन, अंतरंग क्रीड़ा भवन, स्टेडियम से युक्त विशाल क्रीडा प्रांगण, अनुभवी एवं योग्य शिक्षकों, कुशल, मृदुभाषी शिक्षणेत्तर कर्मचारियों एवं लगभग 3500 विद्यार्थियों के अध्ययन-अध्यापन एवं शोध की व्यवस्था है। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी से सम्बद्ध यह महाविद्यालय सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड क्षेत्र में शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार में अग्रणी भूमिका का निर्वहन कर रहा है।

संगोष्ठी : अवलोकन

हम आधुनिक युग में जी रहे हैं। अगर खुले शब्दों में कहें तो यह कि आधुनिक होने का दावा कर रहे हैं, क्योंकि आधुनिकता एक कालबोधक प्रक्रिया है और हमने इस प्रक्रिया को अपना लेने का अहंकार पाल लिया है। इस अंहकार के पीछे एक चीज छूटती जा रही है और वह है हमारी संस्कृति। आधुनिक होने की प्रक्रिया में यों कहें कि भौतिकता की अंधी दौड़ में हमने संस्कार और संस्कृति को कहीं-न-कहीं किनारे कर दिया है। बुद्धिजीवी होने के नाते और दायित्व निर्वहन की औपचारिकता के बीच हमने कुछ विषयों पर विमर्श अवश्य किया है, किन्तु संस्कृति जैसे विषय को विमर्श के लिये चुनने का साहस नहीं दिखाया। नई शिक्षा नीति 2020 में संस्कृति के सन्दर्भ को मुख्यधारा में लाने का प्रयास शिक्षा के नीति-निर्धारकों द्वारा हाल ही में किया गया है। ज्ञान की कोई सीमा नहीं है, अतः उपर्युक्त परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए इस दो दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी हेतु संस्कृति के मूल्यांकन की बात पाठ्यक्रम और अध्ययन-अध्यापकीय परिवेश को ध्यान में रखते हुए सोची गई है।

इक्कीसवीं सदी के तृतीय दशक में यह विचारणीय है कि हमें अपनी संस्कृति को पुनः सुदृढ़ करना होगा। हमारी जीवन शैली, आचरण सृष्टि और मानवीय मर्यादा तीनों ही पक्षों से विचार करने पर यह स्पष्ट होता है कि हम विखण्डनवाद के बीच से गुजर रहे हैं। नवीन विश्व व्यवस्था में उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण के साथ वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में हमें संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को मूल्यांकित करना होगा। दरअसल आज आवश्यकता इस बात की है कि हम पुनः इस विषय पर विचार विमर्श करें कि क्या भारत फिर से विश्वगुरु बनने की शक्ति से परिपूर्ण है? एवं लोक संस्कृति की राष्ट्र-निर्माण में क्या भूमिका है? नई शिक्षा नीति 2020 इस उद्देश्य की प्राप्ति में किस प्रकार से सहयोगी हो सकती है? इस संगोष्ठी में इन्हीं प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास है।

तकनीकी सत्र : उपविषय

1. भारतीय संस्कृति-लोक संस्कृति : स्वरूप, विविध आयाम और उपादेयता
2. भारतीय संस्कृति-लोक संस्कृति और नई शिक्षा नीति : ऐतिहासिक परिदृश्य
3. लोक साहित्य और लोक संस्कृति : स्वरूप, विविध आयाम और उपादेयता
4. लोक संस्कृति, जननायक और नई शिक्षा नीति
5. राष्ट्र निर्माण, भारतबोध और नई शिक्षा नीति
6. वैश्विक परिवेश में भारत और नई शिक्षा नीति
7. आत्मनिर्भर भारत के सन्दर्भ में नई शिक्षा नीति :
8. नवोन्मेषी अनुसंधान में नई शिक्षा नीति की भूमिका
9. भारतीय संस्कृति, लोक संस्कृति और नई शिक्षा नीति : वर्तमान राजनैतिक सन्दर्भ
10. भारतीय संस्कृति, लोक संस्कृति और नई शिक्षा नीति : वर्तमान भौगोलिक सन्दर्भ
11. भारतीय संस्कृति, लोक संस्कृति और नई शिक्षा नीति : वर्तमान सामाजिक परिदृश्य
12. भारतीय संस्कृति, लोक संस्कृति और नई शिक्षा नीति : वर्तमान शैक्षिक सन्दर्भ
13. भारतीय संस्कृति, लोक संस्कृति और नई शिक्षा नीति : वैज्ञानिक प्रगति के पहलू
14. भारतीय संस्कृति, लोक संस्कृति और नई शिक्षा नीति : सूचना तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी के बढ़ते चरण
15. आजादी की कहानी, राष्ट्र निर्माण और नई शिक्षा नीति
16. भारतीय समाज, भाषा, साहित्य के विविध विमर्श और नई शिक्षा नीति
17. नई शिक्षा नीति : स्वरूप और आवश्यकता/प्रासंगिकता
18. नई शिक्षा नीति : चुनौतियां और समाधान
19. नई शिक्षा नीति : पाठ्यक्रम निर्माण, उपलब्धता के विविध पहलू
20. आजादी का अमृतकाल : भारतीय संस्कृति : नई शिक्षा नीति

शोध पत्र आमंत्रण एवं पंजीकरण

सहभागियों से अनुरोध है कि अपने शोधपत्र एवं शोधपत्र -सार की लिखित/टंकित प्रति (हिन्दी हेतु कृतिदेव 10 या यूनिकोड फाण्ट साईज 14 एवं अंग्रजी हेतु New Times Roman, Font Size 12 में) जो सुपाठ्य हो लगभग 15 मार्च 2023 तक dvcseminar2023@gmail.com पर अवश्य भेज दें। शोध सार लगभग 250 शब्दों में एवं आलेख अधिकतम 3500 शब्दों में होना चाहिए। शोध पत्र प्रस्तुतिकरण हेतु ऑनलाइन लिंक पंजीकृत सहभागियों की ईमेल/व्हाट्सएप ग्रुप पर सेमिनार से पूर्व भेज दी जायेगी।

पंजीकरण शुल्क अध्यापकों के लिए 600 रु. और शोधछात्रों के लिए 500 है। विस्तृत विवरण हेतु आप तकनीकी संचालन समिति के किसी सदस्य से सम्पर्क कर सकते है।

इच्छुक सहभागियों से निवेदन है कि वे निम्न लिंक पर दिनांक 17 मार्च 2023 तक अपना पंजीकरण अवश्य कर दें -

https://forms.gle/HhSy4w4q9WLTSJct8

संगोष्ठी की नवीनतम जानकारी हेतु निम्न व्हाट्सग्रुप नं0 7905531417 से जुड़े-

https://chat.whatsapp.com/HfJGLOJOt1rHKVTJ76POhv